

इकाई 4

भाषा में अधिगम स्रोत का उपयोग

इकाई की रूपरेखा

4.0 प्रस्तावना

4.1 उद्देश्य

4.2 शब्दकोश का उपयोग

4.3 विश्वकोश

4.4 समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं

4.5 कैसे/किस प्रकार करें

4.6 कक्षागत अन्तःक्रिया द्वारा वाद्-विवाद और चर्चा

4.6.1 विद्यार्थी- विद्यार्थी

4.6.2 विद्यार्थी- शिक्षक

4.7 सारांश

4.8 अभ्यास प्रश्न/चिन्तनात्मक प्रश्न

4.9 प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

4.10 सन्दर्भ/अन्य अध्ययन

4.0 प्रस्तावना

आज मनुष्य का जीवन भाषा के बिना अपंग है क्योंकि भाषा ही वह माध्यम है जिसके जरिए हम अपनी बात दूसरों तक पहुँचाते हैं और दूसरों की भावनाओं, विचारों व मनोभावों को समझ पाते हैं, इसलिए भाषा से ही हमारी सांस्कृतिक पहचान बनती है। साधारण शब्दों में, भाषा को विचारों तथा अनुभवों को प्रकाशित करने का सांकेतिक साधन कह सकते हैं, अर्थात् मनुष्य द्वारा व्यक्त की गई सार्थक वाणी को भाषा कहते हैं।

भाषा अधिगम एक पारस्परिक क्रिया है जो कक्षा में संचार या संवाद के रूप में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच लगातार चलता रहता है इसी संचार को वाद-विवाद/चर्चा कहा जाता है। अधिगम स्रोत का तात्पर्य, शिक्षण के उन उपकरणों से है, जिनका कक्षा में प्रयोग करने से छात्रों को देखने व सुनने वाली इन्द्रियों से ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है। दृश्य-श्रव्य सामग्री का मनोवैज्ञानिक आधार एक इन्द्रिय के बजाय अनेक इन्द्रियों से ज्ञान प्राप्त करना है, जिससे छात्र उस ज्ञान को अपेक्षाकृत स्थायी रूप से अपने मस्तिष्क में धारण कर सकते हैं। अधिगम स्रोत में दृश्य स्रोत, श्रव्य स्रोत, श्रव्य-दृश्य स्रोत आदि आते हैं। अधिगम स्रोत की उपयोगिता मुख्यतः ध्यान आकर्षित करने, विषयवस्तु को सरल बनाने, प्रस्तुतीकरण करने एवं ज्ञान में वृद्धि करने के लिए किया जाता है। अतः भाषा अधिगम को सीखने, जानने या प्रयोग करने के लिए जरूरी है कि बच्चों को अधिक से अधिक शब्दकोश का उपयोग करना आना चाहिए। अपने ज्ञान को अधिक विस्तृत करने के लिए विश्वकोश का भी ज्ञान होना चाहिए, तभी हम अपने ज्ञान का अधिक से अधिक उपयोग कर सकते हैं। अतः इस इकाई में शब्दकोश का उपयोग, विश्वकोश, समाचार पत्र व पत्रिकाओं का उपयोग आदि के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

4.1 उद्देश्य: इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- शब्दकोश की उपयोगिता के बारे में जान सकेंगे।
- विश्वकोश के अर्थ को समझकर, इसका उपयोग समझ सकेंगे।
- समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं के बारे में जान कर, इसके महत्व को समझ सकेंगे।
- भाषा में अधिगम स्रोत के उपयोग के बारे में समझ सकेंगे।
- कक्षा में शिक्षक-विद्यार्थी और विद्यार्थी-विद्यार्थी के मध्य होने वाली अंतःक्रिया द्वारा चर्चा और वाद-विवाद को समझ सकेंगे।

4.2 शब्दकोश का उपयोग (Use of Dictionary)

शब्दकोश, एक या एक से अधिक विशिष्ट भाषाओं में शब्दों का एक संग्रह है जिसमें, सूचना, परिभाषाएं, उच्चारण, अनुवाद, अर्थ अन्य जानकारीयां उपलब्ध रहती हैं अर्थात् शब्दकोश उस ग्रंथ को कहते हैं जिसमें अक्षरक्रम/वर्णक्रम से शब्द और उनके अर्थ दिए गए होते हैं। ऐसा ग्रन्थ जिसमें किसी भाषा के शब्दों का वर्णक्रम में संग्रह तथा उसी भाषा अथवा अन्य भाषा में विभिन्न शब्दों के उच्चारण व अर्थ दिए गये हों। बड़े शब्दकोशों में शब्दों से सम्बन्धित मुहावरे और प्रयोग भी दिए जाते हैं।

शब्दकोश एक भाषा में भी निर्मित होता है और अन्य भाषा से अन्य भाषा में भी, अर्थात् हिंदी के शब्दों का अर्थ हिंदी में देने की प्रक्रिया एक भाषा से उसी भाषा से अर्थ बतलाने वाला शब्दकोश है और संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में अर्थ बतलाने वाला शब्दकोश है। अंग्रेजी भाषा से अंग्रेजी भाषा में अर्थ देकर साथ ही हिंदी भाषा में भी अर्थ देने का प्रचलन शब्दकोश में बहुत लाभदायक माना गया है।

बच्चों को शब्दकोश का प्रयोग सिखाना हितकर होता है। उन्हें किसी शब्द के ठीक-ठीक अर्थ, वर्तनी और उच्चारण को सिखाने के लिए शब्दकोश को देखने की आदत डालनी चाहिए। इससे स्वतः क्रिया तथा आत्म-विश्वास बढ़ेगा और अधिक ज्ञान प्राप्त होगा। शब्दकोश के क्रियात्मक तथा सार्थक प्रयोग में आवश्यक कौशलों तथा संकल्पनाओं का अवबोध कोश की तत्परता कहलाता है। इन्हें सीख लेने पर विद्यार्थी शब्दकोश का प्रयोग स्वेच्छा से करते हैं।

जब सन्दर्भ (Contexts) को समझने से व अन्य सीखने की तकनीकों के द्वारा अर्थ यदि स्पष्ट नहीं होता है, तो इसे जानने हेतु विद्यार्थियों से शब्दकोश भी खुलवाएं ताकि प्रत्येक शब्द के विभिन्न भेदों व स्पष्ट उच्चारण से भी वे परिचित हो जाएं। इस तरह शब्दकोश शब्दों को मातृभाषा व अंग्रेजी भाषा दोनों में ही अर्थ स्पष्ट करने में सहायता करेगी।

तो आइये जाने कि शब्दकोश का उपयोग कैसे करें—

- भाषा के वर्णमाला के क्रमानुसार शब्दकोश को विभाजित करें।
- उस शब्द की वर्तनी (Spelling) व वर्णक्रम के आधार पर शब्द खोजें।
- इसके अधिगम और उच्चारण (Pronunciation) देखें।
- समान शब्द के विभिन्न सन्दर्भ(Contexts) में उपयोग देखें।
- बोलने (Speech) के भाग अर्थात् संज्ञा, क्रिया, विशेषण अथवा कोई अन्य सम्बन्धित शब्द देखें।
- समनार्थी (Synonyms) या समान शब्द और विलोम (Antonyms) या विपरीत शब्द से सम्बन्धित शब्द देखें।

आइये कुछ हिन्दी एवं अंग्रेजी शब्दकोश के बारे में जाने—

- नवल जी (2010). नालन्दा विशाल शब्द सागर. आदीश बुक डिपो, नई दिल्ली।
- Sahni, S.B. & Sahni, N. (2014). Sahni Advanced Dictionary, Hindi-Hindi-Eng, Publishers, Sahni Brothers, Agra.
- Kumar, S. & Sahai, R. (2014). Oxford English-English- Hindi Dictionary, Published In India by Oxford University Press, New Delhi.

4.3 विश्वकोश (Encyclopaedia)

विश्वकोश ग्रीक शब्द 'एन'(में) से निकला है Kyklios (चक्र) और Paedeia (ज्ञान), दूसरे शब्दों में। ज्ञान का चक्र कभी-कभी ज्ञान की श्रृंखला के रूप में कहा गया है। एक विश्वकोष में कई विषयों से संबंधित सामान्य जानकारी होती है। विश्वकोश, एक महत्वपूर्ण संदर्भ उपकरण के रूप में काम करते हैं।

विश्वकोश ज्ञान की किसी शाखा का व्यापक सार है। ऐसा ग्रन्थ जिसमें वर्णक्रम में व्यवस्थित अधिगम की विभिन्न शाखाओं अथवा क्षेत्रों पर प्रकाश डाला जाता है।

विश्वकोश बहुत से ग्रन्थों/साहित्यों का संकलन होता है, जिसमें विभिन्न व्यक्तियों के जीवन गाथा सम्बन्धी तथा सामान्य प्रकार के लेख होते हैं। विश्वकोश में शिक्षा से संबंधित क्षेत्रों का वर्णन भी होता है। विश्वकोश में विषय सामग्री का संगठन सामान्यतः वर्णमाला के आधार पर किया जाता है।

एक पूर्ण व विस्तृत विषयसूची, प्रतिसन्दर्भ/लघु प्रविष्टियाँ तथा विभिन्न संकेत आवश्यक रूप में इसमें सम्मिलित होते हैं। शिक्षा के एक अच्छे स्तर के विश्वकोश में लेख विद्वतापूर्ण होते हैं तथा उसका सम्पूर्ण प्रारूप व्यक्तिगत लेखों के स्वरूप एवं प्रकार को निर्धारित करता है। व्यक्तिगत लेख विश्वकोश के सामान्य प्रारूप की शैली आदि के विभिन्न स्तरों के सभी पक्षों से सम्बन्धित होते हैं।

विश्वकोश में विशेषज्ञों द्वारा लिखे गए विभिन्न विषयों पर संक्षिप्त सूचनायें होती हैं। उनके अन्तर्गत सूचनाओं के अनुकूल साधन और प्रायः उद्धरण और सन्दर्भ पुस्तकें आती हैं।

विश्वकोष, संदर्भ पुस्तक है जो जानकारी और तथ्यों को देखने के लिए उपयोग की जाती है तथा जो कि एक विशेष विषय पर एक सामान्य पृष्ठभूमि प्रदान कर सकते हैं।

विश्वकोष का उपयोग लोग अपने विषयों पर अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए करते हैं। प्रायः अनुसंधान के क्षेत्र में कार्यों को करने के लिए विश्वकोष का उपयोग किया जाता है।

विश्वकोश के अन्तर्गत अनेक विषयों पर सारगर्भित लेख होते हैं जो आधिकारिक विद्वानों द्वारा लिखे गये होते हैं। इनमें अल्प प्रयास से ही अनेक महत्वपूर्ण सन्दर्भ ढूँढे जा सकते हैं। विश्वकोश के अन्तर्गत शैक्षिक समस्याओं पर अन्यन्त महत्वपूर्ण अनुसन्धानों के वर्णन है। प्रत्येक निबन्ध एक अधिकारी विद्वान द्वारा लिखा गया है।

आइये विश्वकोश से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथों को जाने—

Walter,S.Monroe, ed.(1968). Encyclopaedia of Educational Research, American Education Research Association, Revised ed., The Macmillan Co., New York.

Henry, D. Rivlin and Schueller, H.(1943). Encyclopaedia of Modern Education, Philosophical Library, New York.

Paul Monroe, ed. (1911). Encyclopaedia of Education, The Macmillan Co., New York.

Ralph, B. winn, Ed.,(1943). Encyclopaedia of Child Guidance, Philosophical Library, New York.

Oscar, J. Kaplan ed., (1948). Encyclopaedia of Vocational Guidance, Philosophical Library, New York.

हमारे देश में लगभग 35 वर्ष पूर्व श्री जे.पी.नायक ने सर्वप्रथम भारतीय शिक्षा का विश्वकोश तैयार करने का प्रयास किया गया। भारत सरकार के हिन्दी निदेशालय द्वारा शिक्षा का विश्वकोश 1980 में प्रकाशित किया गया।

तो आइये कुछ प्रकाशित भारतीय शिक्षा के विश्वकोश के बारे में जानें—

- Rajput,J.S. (2004). Encyclopedia of Indian Education. Volume I (A-K), N.C.E.R.T., New Delhi.
- Rajput, J.S. (2004). Encyclopedia of Indian Education Volume II, (L-Z), NCERT, New Delhi.
- Monroe,P.(2006). Encyclopedia of Teaching Methods. Cosmo Publications, New Delhi.

अपनी प्रगति की जाँच करें

नोट: (अ) अपना उत्तर प्रश्न के नीचे दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

1. शब्दकोश से आप क्या समझते हैं तथा शब्दकोश किस क्रम के दिये जाते हैं।

.....
.....
.....

2. विश्वकोश से आप क्या समझते हैं?

.....
.....
.....

3. विश्वकोश से संबंधित किन्हीं दो ग्रंथों के नाम लिखिए ?

.....
.....
.....

4. एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित किसी एक विश्वकोश का नाम लिखिए।

.....
.....
.....

4.4 समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं (News Papers and Journal)

समाचार पत्र शिक्षा के क्षेत्र में नये विकास, सम्मेलन, अभिलेख और भाषणों आदि की नवीनतम सूचनाये देते हैं। नवीन घटनायें और शैक्षिक समाचार भी समाचार पत्रों में प्रकाशित होते हैं। समाचार पत्र एक राष्ट्र की संस्कृति का दैनन्दिन का लेखा-जोखा है। हमारे देश में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृति, मराठी एवं अन्य क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं में भी अनेक समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं निकलती रहती हैं जिससे विद्यार्थी प्रतिदिन कुछ-न-कुछ इन समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं से ज्ञान ग्रहण करता रहता है। इस प्रकार से ये पत्रिकाएं विद्यार्थियों को अनौपचारिक रूप से शिक्षित करती रहती हैं। सन् 1953 में प्रथम प्रेस आयोग की सिफारिश के आधार पर 1 जुलाई 1956 को भारत के समाचार पत्र पंजीयक या प्रेस पंजीयक का कार्यालय अस्तित्व में आया। महाराष्ट्र से प्रकाशित देश का सबसे पुराना समाचार 'बाम्बे समाचार' है।

आइये समाचार पत्रों के महत्व, लाभ, प्रमुख समाचार पत्र एवं एजेंसियों के बारे में जाने—

- **समाचार पत्र का महत्व**

वर्तमान युग में समाचार पत्र हमारे जीवन का एक प्रमुख अंग बन गया है। प्रातः उठते ही हम समाचार पत्र को पढ़ने के लिए बेचैन से हो उठते हैं। सुबह होते ही समाचार पत्र वितरित करने वाला हॉकर हमारे घर इच्छित समाचार पत्र पहुंचा देता है। समाचार पत्रों से हमें प्रतिदिन देश-विदेश के सभी क्षेत्रों के समाचार घर बैठे प्राप्त हो जाते हैं। इनसे हमारे ज्ञान में वृद्धि होती है और हम उनसे बहुत कुछ सीखते हैं। समाचार पत्र व्यापारिक वस्तुओं के विज्ञापन के लोकप्रिय साधन हैं।

आज समाचार पत्रों की व्यापकता इतनी अधिक बढ़ हो गई है कि ये जन-मानस का प्रमुख अंग बन चुके हैं। समाचार पत्र प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली के प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने भावों, अनुभवों व संवेदनाओं को समाज व राष्ट्र के सम्मुख निष्पक्ष और निर्भय होकर व्यक्त कर सकता है। समाचार पत्रों के माध्यम से किसी विशेष विषय से संबंधित लोगों का मत या उनकी राय भी जानी जा सकती है। खेल जगत में होने वाली गतिविधियों के आयोजन के बारे में पता चल जाता है कि भविष्य में कौन से आयोजन किस तिथि और कहां पर हो रहे हैं। विश्व के महानतम वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, महापुरुषों, राजनीतिज्ञों एवं खिलाड़ियों आदि को लोकप्रिय बनाने में समाचार पत्र प्रमुख भूमिका अदा करते हैं। समाचार विज्ञापनों के माध्यम से विद्यालय, महाविद्यालय, एवं विश्वविद्यालय अपने संस्थान का प्रचार-प्रसार करते हैं, जिससे विद्यार्थियों को अपनी अच्छी संस्थानों के बारे में पता चल जाता है कि हमें कौन से संस्थान में प्रवेश लेना है।

अतः समाचार पत्रों का मानव के जीवन में विशेष महत्व है। समाचार पत्र किसी एक व्यक्ति या समाज के लिए नहीं अपितु पूरे समाज व राष्ट्र के उत्थान की भावना पर कार्य करते हैं।

- **समाचार पत्रों से लाभ**

विभिन्न सरकारी एवं गैर नीतियों नीतियों व योजनाओं की जानकारी समाचार पत्र के माध्यम से होती है। खेलकूद, संस्कृति, सिनेमा, शिक्षा संबंधी आदि समाचार इन समाचार पत्रों में छपते रहते हैं। इससे व्यक्तित्व वचरित्र का विकास होता है। प्रतिदिन समाचार पत्र पढ़ने से हमारी भाषा और विचार प्रकट करने की क्षमता का विकास होता रहता है।

- **समाचार एजेंसियाँ (News Agencies)**

आइये समाचार पत्रों को प्रकाशित करने वाली भारत की प्रमुख समाचार एजेंसियों के बारे में जाने—

- **Press Trust of India(PTI):** यह भारत की सबसे बड़ी समाचार एजेन्सी है जो बिना किसी मुनाफे के चलाई जाने वाली सहकारी संस्था है। इसकी स्थापना 27 अगस्त 1947 को हुई और 1 फरवरी 1949 से इसने अपनी सेवाएं प्रारम्भ कर दी। यह हिन्दी और अंग्रेजी में अपनी समाचार सेवाएं दे रही है।
- **United News of India(UNI):** United News of India की स्थापना 19 दिसम्बर 1959 को हुई। वर्ष 1982 में यू.एन.आई. पूर्ण रूप से हिन्दी तार सेवा 'यूनीवार्ता' का शुभारम्भ किया जो भारत की पहली समाचार एजेन्सी बन गई। UNI विश्व की सबसे बड़ी सूचना कम्पनी 'रायटर' के माध्यम से विश्व के समाचार वितरित करती है।
- **Indian Press Council(IPC):** भारतीय प्रेस परिषद् की स्थापना समाचार पत्रों की स्वतंत्रता की रक्षा करने, भारत में समाचार पत्रों व समाचार एजेन्सियों के स्तर को बनाए रखने और उसमें सुधार लाने के उद्देश्य से संसद के अधिनियम के तहत की गई। इस परिषद् के अध्यक्ष भारत के उच्चतम न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश होते हैं। यह पंजीकृत समाचार पत्रों और समाचार एजेन्सियों से शुल्क वसूल करती है। केन्द्र सरकार से अनुदान भी प्राप्त करती है।
- **गुटनिरपेक्ष समाचार एजेन्सी पूल—** यह गुटनिरपेक्ष दिशों की समाचार एजेन्सियों के बीच समाचार आदान-प्रदान करने की व्यवस्था है। यह वर्ष 1976 में शुरू हुआ। पूल के समाचार चार भाषाओं में प्रेषित किए जाते हैं— अंग्रेजी, स्पेनिश, फ्रेंच और अरबी।

● भारत के प्रमुख समाचार पत्र

जनसत्ता, हिन्दुस्तान, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, नई दुनिया, हिन्दुस्तान टाइम्स, टाइम्स ऑफ इंडिया, हरिभूमि, नव भारत आदि हैं

(ब) **पत्रिकाएं:** समय-समय पर निकलने वाली पत्रिकाओं को एक प्रकाशन के रूप में परिभाषित किया गया है जो कि क्रमबद्ध भागों में प्रायः एक निश्चित अन्तराल के बाद तथा अनिश्चित काल तक चलते रहने के उद्देश्य से प्रकाशित होती है। इनके अन्तर्गत वार्षिक-पुस्तिका, अभिलेख, मासिक, त्रिमासिक-छमाही-वार्षिक पत्रिकाएं, एवं समय-समय पर प्रकाशित होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं की सूचांक आदि आते हैं। ये पत्रिकाएं सामान्यतः पत्रिकाओं के कमरे में खुली अलमारियों में रखी जाती हैं।

तो आइये शिक्षा के क्षेत्र में प्रकाशित होने वाली कुछ महत्वपूर्ण पत्रिकाओं के बारे में जाने—

- Journal of All India Association For Educational Research
- Journal of Educational Planning and Administration

- Journal of Indian Education
- Indian Education Review
- Anweshika: Journal of Teacher Education
- Indian Educational Abstract
- School Science
- भारतीय आधुनिक शिक्षा
- प्राथमिक शिक्षा

4.5 कैसे/किस प्रकार करें

• भाषा की समझ कैसे या किस प्रकार करें, आइये जाने

यदि बच्चों में भाषा की व्यापक समझ विकसित करना चाहते हैं तो शब्दकोश/उपलब्ध साहित्य की समझ बच्चों में विकसित करना होगा। शब्दकोश/साहित्य हमें भाषा के अनेक आयामों पर विचार करने, सोचने और कल्पना करने के विविध तरीकों से परिचित कराता है। यही नहीं उसमें भाषा के विभिन्न प्रयोगों की समझ के साथ ही अनेकानेक सामाजिक अनुभव भी गुंथे रहते हैं, जिसमें मानवीय संवेदनाएँ, जीवन मूल्य और अनेक जीवन अनुभव शामिल होते हैं। इनसे स्वयं को जोड़कर देखना सामाजिक संवेदना को विकसित करने के लिए बेहद ज़रूरी है।

भाषा की समझ विकसित करने के लिए निम्नलिखित कौशलों एवं संकेतकों को भी जानना अत्यंत आवश्यक है।

✓ सुनकर समझना

- स्वतंत्र रूप से अपनी बात कह पाना।
- कविता/कहानी/विवरण आदि हाव-भाव सहित सुना पाना।
- दूसरों के अनुभव सुनकर अपने शब्दों में सुना पाना।

✓ समझकर पढ़ना

- पढ़े गए पाठ का सारांश अपने शब्दों में बता पाना।
- निर्देश/सूचनाओं को पढ़कर समझ पाना।
- पढ़ी गई सामग्री के प्रमुख तत्व ग्रहण कर पाना।

✓ भाषा विश्लेषण

- भाषा में व्याकरण के नियमों को पहचान पाना।
- मुहावरे, कहावतों आदि का वाक्यों में प्रयोग कर पाना।
- किसी वाक्य या अनुच्छेद में शब्द/शब्दों को उनके पर्यायवाची या विलोम से विस्थापित करने पर अर्थ में होने वाले परिवर्तन को समझ पाना।

✓ नवीन विचार की कल्पना

- मन से कहानी, कविता, लेख आदि बना पाना।
- दी गई कहानी, कविता, लेख आदि में पात्रों/विवरण आदि को बदलकर लिख पाना।
- दिए गए विषय पर विभिन्न सामग्री/विषयवस्तु को पढ़कर अपनी समझ बना पाना।

✓ तर्क करना

- किसी पाठ्यवस्तु के वाक्यों को सही क्रम में लगा पाना।
- दी गई विषयवस्तु पर, प्रश्न बनाना/प्रश्न करना/उत्तर दे पाना।
- अपनी बात को क्योंकि, इसलिए, अर्थात्, लेकिन आदि का प्रयोग करते हुए स्थापित कर पाना।

✓ स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति

- किसी कविता, कहानी को चित्रों द्वारा प्रदर्शित करना।
- कविता, कहानी, विवरण आदि को हाव-भाव तथा उतार-चढ़ाव सहित सुना पाना।
- चित्र, घटना, स्थान, उत्सव आदि का वर्णन कर पाना।
- किसी गद्यांश और पद्यांश को अपने शब्दों में लिख पाना।
- दिए गए विषय पर अनुच्छेद, पत्र लिख पाना।
- कविता व नाटक को कहानी में तथा कहानी को नाटक में बदल पाना।
- चित्रकथा को संवाद दे पाना।

● भाषा में अधिगम स्रोत का उपयोग (Use of Learning Resources in Language)

भाषा को सरल, रुचिकर एवं आनंददायी बनाने के लिए हम विभिन्न अधिगम स्रोत का उपयोग करते हैं ।

तो आइये जाने कि भाषा में अधिगम स्रोत का उपयोग क्यों आवश्यक है—

- **ध्यान आकर्षित करने :-** अधिगम स्रोत का उपयोग विद्यार्थियों के ध्यान आकर्षित करने तथा पाठ्यवस्तु को बोधगम्य बनाने में उपयोगी होती है।

- **विषयवस्तु को सरल बनाने :-** कठिन विषय से संबंधित अवधारणाओं को सरल, रोचक एवं स्पष्ट बनाने में उपयोगी होती है।
- **मनोवैज्ञानिक लाभ :-** बच्चों का स्वभाव प्रायः नई वस्तुओं का निरीक्षण एवं परीक्षण करने की ओर सदैव अग्रसित रहता है। वे किसी भी नवीन वस्तु के प्रति रुचि एवं जिज्ञासा पूर्वक जानकारी को प्राप्त करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। अतः अधिगम स्रोत के प्रयोग से छात्रों को अध्ययन के प्रति रुचिपूर्ण दृष्टिकोण बनाना एवं आवश्यकताओं की पूर्ति करना मनोवैज्ञानिक दृष्टि से लाभदायक है।
- **ज्ञानेन्द्रियों का अधिकाधिक उपयोग :-** नवीन अनुभव ग्रहण करने के लिए जितनी अधिक से अधिक ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग किया जाता है, उसमें उतनी ही अधिक सुविधा होती है।
- **समय की बचत :-** अधिगम स्रोत का प्रयोग किए जाने से अध्यापक और विद्यार्थी दोनों के ही समय की बचत होती है। कई मुख्य बातें ऐसी होती हैं जिन्हें अगर शब्दों के द्वारा ही अध्यापक समझाने लगे तो उसे बहुत अधिक समय लगता है।
- **एकाग्रता :-** जब अध्यापक कक्षा में अधिगम स्रोत को बच्चों के सम्मुख प्रस्तुत करता है तो वे उन नवीन वस्तुओं को जिज्ञासापूर्वक एकाग्रचित होकर देखते, सुनते व समझते हैं।

● **अधिगम स्रोत का उपयोग कक्षा में कब, कैसे एवं किस प्रकार करें –**

- कक्षा में आते की अधिगम स्रोत को न तो दीवारों पर लगाएं और न ही अन्य स्थानों पर खुला रखें।
- कक्षा में जिस समय अधिगम स्रोत का प्रदर्शन करना हो तभी उसे बच्चों को दिखाना चाहिए।
- अधिगम संसाधन/स्रोत को पर्याप्त ऊँचाई पर रखकर प्रदर्शित करना चाहिए ताकि सभी बच्चों को दिखाई दे।
- यह विषयवस्तु व छात्रों के अनुकूल हो।
- अधिगम स्रोत उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पर्याप्त, उपयुक्त, स्पष्ट एवं पठनीय हो।
- अधिगम स्रोत आसानी से समझ में आने वाली और कक्षा में सीखने की क्रियाओं को प्रोत्साहित करने वाली हो।
- अधिगम स्रोत बच्चों के स्थानीय परिवेश, विषयवस्तु और सामाजिक पृष्ठभूमि से जुड़ी हो।

● विभिन्न अधिगम स्रोत –

- भाषा प्रयोगशाला
- विषयवस्तु एवं शिक्षण विधि सम्बन्धी शैक्षिक सामग्री
- प्रश्न बैंक
- शिक्षक हस्तपुस्तिका
- छात्र कार्यपुस्तिका
- स्व-अधिगम शैक्षिक स्रोत
- शिक्षण स्रोत किट
- चार्ट, मांडल

अपनी प्रगति की जाँच करें

नोट: (अ) अपना उत्तर प्रश्न के नीचे दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

5. समाचार पत्र से आप क्या समझते हैं। United News of India की स्थापना कब हुई।

.....

6. पत्रिका (Journal) से आप क्या समझते हैं? किन्ही दो पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

.....

7. भाषा की समझ विकसित करने के लिए कौन-कौन से कौशलों एवं संकेतकों को बताया गया, इनके मुख्य बिन्दुओं को लिखिए।

.....

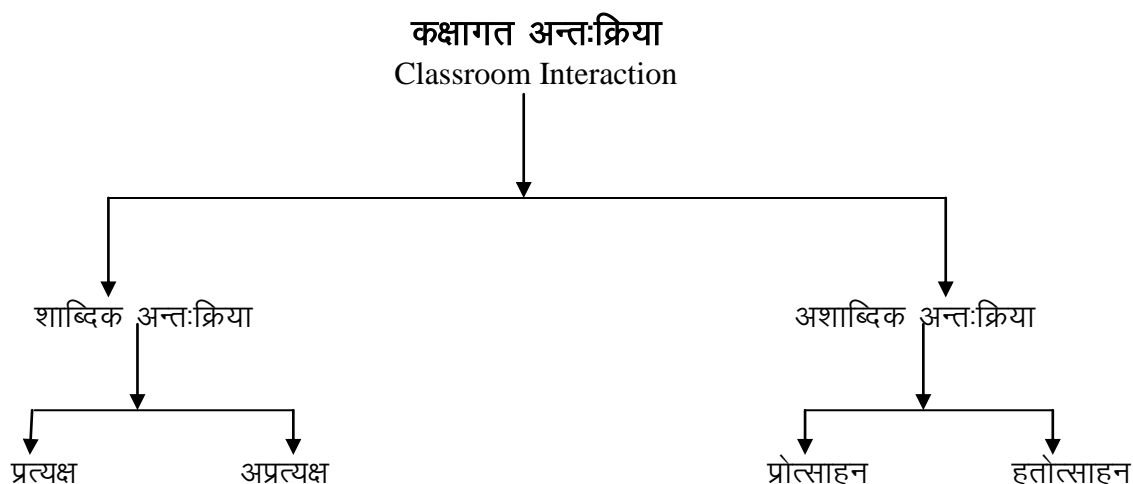
4.6 कक्षागत अन्तःक्रिया द्वारा वाद विवाद और चर्चा

(Debate and Discuss Through Classroom Interaction)

आधुनिक काल में शिक्षण से तात्पर्य विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करना मात्र ही नहीं है बल्कि शिक्षक-विद्यार्थी के मध्य अन्तःक्रिया से लिया जाता है। फ्लेण्डर्स के अनुसार शिक्षण एक सामाजिक क्रिया है जो शिक्षक व विद्यार्थियों के मध्य अन्तःक्रिया से सम्पन्न होती है। कक्षागत अन्तःक्रिया मुख्यतः शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य चलती है। शिक्षण प्रक्रिया में एक ओर विद्यार्थी सीखने वाला है तो दूसरी ओर शिक्षक सिखाने वाला होता है। कक्षा में शिक्षण के अन्तर्गत शिक्षक, विद्यार्थियों का अवलोकन करता है, उनकी भावनाओं का अनुभूति करता है तथा अधिकाधिक समझने का प्रयास करता है, विषयवस्तु को विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करता है, उसका विश्लेषण करता है एवं व्याख्या करता है अतः इन सभी शिक्षण क्रियाओं में भाषा का प्रयोग करना पड़ता है। शिक्षण मुख्यतः एक शाब्दिक व्यवहार होता है यद्यपि शिक्षक के चेहरे के हाव-भाव, शारीरिक क्रियायें आदि जैसे अशाब्दिक व्यवहार भी कक्षा में होते हैं परन्तु निरीक्षणों से यह पता चलता है कि कक्षा शिक्षण में शाब्दिक व्यवहार की ही प्रधानता होती है।

शिक्षण क्रियाओं की सुव्यस्थित प्रणाली है जिसमें अधिगम शिक्षक-विद्यार्थियों के पारस्परिक क्रियाओं द्वारा किया जाता है। शिक्षक और विद्यार्थियों के पारस्परिक/अन्तःक्रिया को शिक्षण कहते हैं। शिक्षक-विद्यार्थी एवं विद्यार्थी-विद्यार्थी के मध्य शाब्दिक सम्प्रेषण के निरीक्षण तथा अंकन विधि को ही कक्षा अन्तःक्रिया विश्लेषण प्रविधि भी कहते हैं।

कक्षागत अन्तःक्रिया का वर्गीकरण चार प्रमुख घटकों में विभाजित किया गया है—



कक्षागत अन्तःक्रिया मुख्यतः दो रूपों में होती है—

(अ) शाब्दिक अन्तःक्रिया (Verval Interaction)

कक्षा में जब शिक्षक तथा विद्यार्थी बोलकर चर्चा करते हैं तो इस व्यवहार को शाब्दिक अन्तःक्रिया कहते हैं। इसमें अभिव्यक्ति का माध्यम मौखिक, लिखित तथा प्रतीकात्मक होता है। प्रायः शाब्दिक अन्तःक्रिया को दो भागों में विभक्त किया गया है।

प्रत्यक्ष: यह वह व्यवहार होता है जिसमें शिक्षक कक्षा में अपना प्रभाव व प्रभुत्व स्थापित करने की चेष्टा करता है, विद्यार्थियों के विचारों व व्यवहारों की आलोचना करता है, कक्षा में विद्यार्थियों को स्वतंत्रतापूर्वक बोलने का अवसर प्रदान नहीं करता है। इसमें विद्यार्थी को वैयक्तिक—भिन्नता के मनोवैज्ञानिक तथ्य को स्वीकार नहीं किया जाता है। इस प्रकार विद्यार्थियों की इच्छा, स्तर, मूल्य, उद्देश्य, निर्णय, कल्याण के लिये कोई स्थान नहीं होता है। परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों के विकास एवं शैक्षिक उपलब्धि में बाधा उपस्थित होती है।

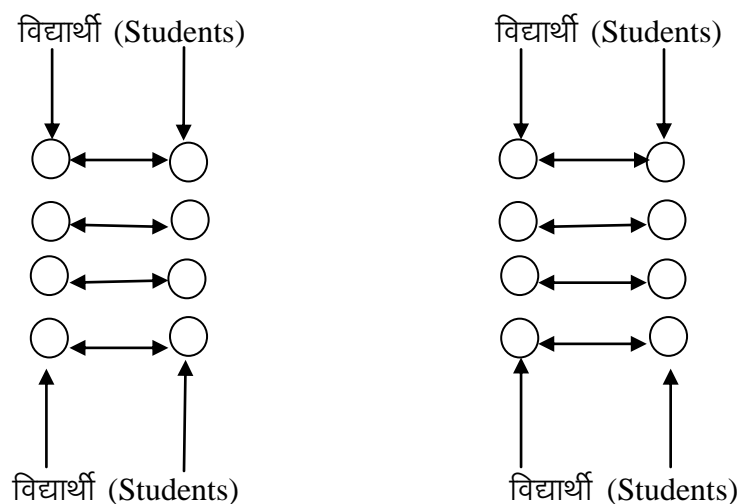
अप्रत्यक्ष: यह वह व्यवहार होता है जिसमें शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों को कार्य करने की, उन्हें विचारों को अभिव्यक्त करने की स्वतन्त्रता प्रदान करता है तो इस प्रकार के व्यवहार के अप्रत्यक्ष व्यवहार की संज्ञा दी जाती है। शिक्षक, विद्यार्थी के विचारों को स्वीकार करता है तथा उनका स्पष्टीकरण करता है, वह अपने विचारों को मानने के लिए विद्यार्थियों को बाध्य नहीं करता। कक्षा में शिक्षक कम बोलता है और विद्यार्थियों को बोलने का अधिक अवसर प्रदान करता है। विद्यार्थियों की समस्याओं को समझ कर उनका समाधान करने का प्रयास करता है। ऐसा शिक्षक प्रश्न अधिक पूछता है जिससे विद्यार्थी अध्ययन—अध्यापन प्रक्रिया में क्रियाशील रहने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

(ब) अशाब्दिक अन्तःक्रिया (Non-Verval Interaction)

अशाब्दिक अन्तःक्रिया वह व्यवहार है जिसमें विद्यार्थी तथा शिक्षक के मध्य बोलकर भावों व विचारों का सम्प्रेषण नहीं होता है अपितु हाव—भाव व संकेत के द्वारा होता है। विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिये शिक्षक का सिर हिलाना, विद्यार्थियों को बोलने से रोकने के लिये अंगुली का प्रयोग, मुस्कराना आदि सभी क्रियायें विद्यार्थियों को शिक्षक के विचारों व भावों से अवगत कराती हैं। किसी विद्यार्थी के गलत काम पर शिक्षक यदि क्रोध से लाल पीला होकर उसकी ओर देखता है, तो निश्चित ही विद्यार्थी समझ जाता है कि उसे काम नहीं करना चाहिए। किसी विद्यार्थी द्वारा कार्य किये जाने पर शिक्षक यदि चेहरे पर मुस्कराहट लाता है, तनाव को कम करता है और सिर हिलाता है तो विद्यार्थी उस प्रकार से कार्य करने से अधिक प्रोत्साहित होता है।

4.6.1 विद्यार्थी-विद्यार्थी (Student-Student)

कक्षागत अन्तःक्रिया के समय विद्यार्थी-विद्यार्थी के मध्य आपस में वाद्-विवाद या चर्चाएं भी होती रहती हैं। कक्षा में प्रायः विद्यार्थी अपने सहपाठी या समूह के साथ बैठते हैं या विद्यार्थियों का अलग-अलग समूह बना दिया जाता है।



चित्र 1: कक्षागत अन्तःक्रिया

कक्षागत अन्तःक्रिया के समय विद्यार्थी-विद्यार्थी प्रायः निम्नलिखित प्रकार की चर्चाएं एवं वाद्-विवाद करते हैं।

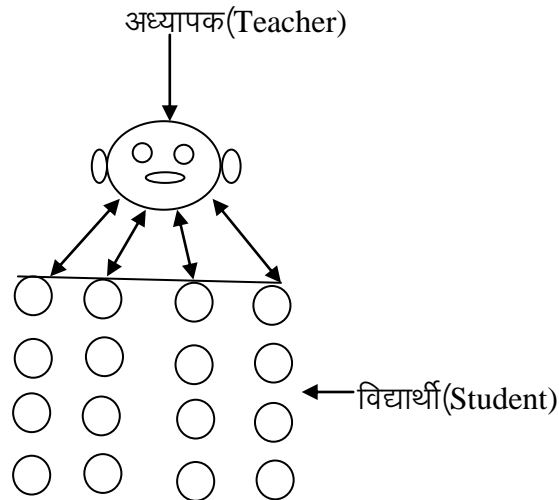
- **पढ़ाई जा रही विषयवस्तु पर:** कक्षा में पढ़ाई जा रही विषयवस्तु के कठिन बिन्दुओं पर विद्यार्थी-विद्यार्थी आपस में चर्चा करके समस्या का समाधान निकालने का प्रयास करते हैं और यदि समस्या का समाधान नहीं निकाल पाते तो फिर शिक्षक से पूछते हैं।
- **शिक्षक के ज्ञान पर:** जब विद्यार्थियों को शिक्षक अपने विषय को अच्छे ढंग से पढ़ाते हैं, बच्चों को समझ में भी आता है तथा बच्चों द्वारा पूछे गये प्रत्येक प्रश्न का जबाब भी देते हैं तो विद्यार्थी आपस में चर्चा करते हैं कि इस शिक्षक को विषय के बारे में बहुत अच्छा ज्ञान है। इसके विपरीत जब विद्यार्थियों को शिक्षक अच्छे ढंग से नहीं पढ़ाते हैं, प्रायः विषय को औपचारिकता मात्रा पढ़ाते हैं जिससे बच्चों को समझ में नहीं आता है तथा बच्चों द्वारा पूछे गये प्रश्न का जबाब भी ठीक ढंग से नहीं देते हैं तो विद्यार्थी आपस में चर्चा करते हैं कि इस शिक्षक को विषय के बारे में अच्छा ज्ञान नहीं है।

- **गृहकार्य पर:** कक्षा में पढ़ाते समय शिक्षक, विद्यार्थियों को गृहकार्य भी देते हैं जिसकी चर्चा विद्यार्थी आपस में भी करते हैं।
- **पाठ्यसहगामी क्रियाओं पर:** विद्यालय में हो रही पाठ्यसहगामी क्रियाओं के बारे में विद्यार्थी आपस में चर्चा करते हैं। बच्चे विभिन्न गतिविधियों के दौरान चित्रकारी, कहानी, कविता, गीत, पेन्टिंग, आदि मौलिक/ उल्लेखनीय कार्यों को फोल्डर/फाइल में व्यवस्थितकर पोर्टफोलियो के रूप में संधारित करते हैं। पोर्टफोलियो में संधारित की गई विभिन्न गतिविधियों को बच्चे अपने तथा अपने साथियों के कार्यों का अवलोकन कर वाद-विवाद एवं चर्चाएं भी करते हैं।
- **सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर:** विद्यालय में हो रही विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर विद्यार्थी आपस में चर्चा व वाद-विवाद करते हैं।
- **घटना से सम्बन्धित:** कभी-कभी अपने साथ घटित होने वाली घटनाओं के बारे में भी बच्चे एक दूसरे से चर्चा करते हैं।
- **परीक्षा प्रणाली पर :** परीक्षा प्रणाली पर भी बच्चे आपस में चर्चा करते हैं कि परीक्षा में प्रश्न किस प्रकार से पूछे जायेंगे। प्रश्नों के प्रकार अर्थात् वस्तुनिष्ठ, अतिलघुउत्तरीय, लघुउत्तरीय, दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के बारे में बच्चे एक दूसरे से वाद-विवाद करते हैं।

उपरोक्त बिन्दुओं के अलावा कभी-कभी बच्चे एक दूसरे से आपस में विद्यालय के वातावरण, पारिवारिक वातावरण, सामान्य ज्ञान, शैक्षिक भ्रमण, विद्यालय में हो रहे खेलकूद आदि पर भी चर्चा करते रहते हैं।

4.6.2 शिक्षक-विद्यार्थी (Teacher-Student)

इस क्रिया में कक्षा अध्यापन के दौरान शिक्षक-विद्यार्थी के मध्य किसी खास बिन्दुओं पर चर्चा होती है। कक्षा में शिक्षण के अंतर्गत शिक्षक-विद्यार्थियों का अवलोकन करता है, उनकी भावनाओं का अनुभूति करता है तथा अधिकाधिक समझने का प्रयास करता है, वह विषयवस्तु को विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करता है, उसका विश्लेषण करता है, व्याख्या करता है, इन सभी शिक्षण क्रियाओं में भाषा का प्रयोग करना पड़ता है। भाषा सिखाने हेतु विद्यार्थियों से आप उसी भाषा में बातचीत करें जिस भाषा में आप विद्यार्थियों को सिखा रहे हैं। आपका वार्तालाप जो पाठ आपने पढ़ाया है उसी से संबंधित होगा, तो विद्यार्थी इसमें भाग लेंगे। सर्वप्रथम कक्षा में पूछें, उनके जवाब मांगें, सभी के जवाब सुने एवं सुनकर यदि कहीं गलती हो तो ठीक करें और उत्तर श्यामपट्ट पर लिखें। इस प्रकार प्रश्नोत्तर के माध्यम से कक्षा में वार्तालाप जारी होगा।



चित्र 2: कक्षागत अन्तःक्रिया (Classroom Interaction)

आइये कक्षा अध्यापन के दौरान शिक्षक-विद्यार्थी के बीच होने वाले वाद्-विवाद एवं चर्चा को एक उदाहरण के माध्यम से समझे कि किस प्रकार से शिक्षक-विद्यार्थी के बीच कक्षागत अन्तःक्रिया(Classroom Interaction) होती है।

उदाहरण: 'अवस्था के परिवर्तन' के बारे में चर्चा करना।

शिक्षक: क्या आप 'अवस्था के परिवर्तन' के बारे में बता सकते हैं।

विद्यार्थी: नहीं

शिक्षक: तो आइये 'अवस्था के परिवर्तन' के बारे में समझे। क्या आप बता सकते हैं कि द्रव की कितनी अवस्थाएं होती हैं?

विद्यार्थी: हाँ, द्रव की तीन अवस्थाएं होती हैं।

शिक्षक: कौन-कौन सी होती हैं बताइये।

विद्यार्थी: ठोस, द्रव एवं गैस

शिक्षक: बहुत अच्छा। यदि आप बर्फ को तपाओगे तो क्या होगा?

विद्यार्थी: सर, यह पिघलकर पानी बन जायेगी।

शिक्षक: शाबाश, इस प्रकार बर्फ को तापने पर तरल बन जाता है।

तो अब बताइये कि क्या मोम भी तपाने पर पिघल जाएगी?

विद्यार्थी: हाँ, मोम भी तपाने पर पिघल जाएगी।

शिक्षक: बहुत अच्छा। बताइये कि पिघले हुए मोम को ठण्डा करने पर क्या होगा?

विद्यार्थी: पिघले हुए मोम को ठण्डा करने पर मोम ठोस में बदल जायेगी।

शिक्षक: शाबाश, तो बताइये कि उपरोक्त उदाहरण से क्या निष्कर्ष निकलता है।

विद्यार्थी: सर नहीं मालूम।

शिक्षक: ठोस तपाने पर तरल अवस्था में और ठण्डा करने पर पुनः ठोस अवस्था में बदल जाता है।

विद्यार्थी: तो क्या इसे ही अवस्था के परिवर्तन कहते हैं।

शिक्षक: हाँ, इसे ही अवस्था के परिवर्तन कहते हैं।

इस प्रकार कक्षागत अन्तःक्रिया के माध्यम से शिक्षक-विद्यार्थी के बीच वाद्-विवाद से बच्चों को अवस्था के परिवर्तन के बारे में समझ विकसित हो गयी।

कक्षागत अन्तःक्रिया के समय विद्यार्थियों को समूह में बैठकर शिक्षण करवाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी आपस में भी एक दूसरे से अन्तःक्रिया कर सकें।

समूह में शिक्षण कार्य करवाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- समूह कार्य करते हुए बच्चों का निरीक्षण करें व उन्हें आवश्यकता होने पर मार्गदर्शन दें।
- समूह कार्य करवाते समय समूह में सभी श्रेणी के विद्यार्थियों को शामिल करें, ताकि उनमें आपसी सहायता से कार्य करने का विकास हो।
- समूह में सभी को धीरे-धीरे बात करने व हल करने हेतु प्रेरित करें।
- समूह कार्य के प्रदर्शन हेतु सभी विद्यार्थियों को मौका दें।
- समूह कार्य में बैठक व्यवस्था व अनुशासन पर विशेष ध्यान दें।
- जिस समूह का कक्षा में बेहतरीन प्रदर्शन हो उसे अभिप्रेरित करें।

अपनी प्रगति की जाँच करें

नोट: (अ) अपना उत्तर प्रश्न के नीचे दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

(ब) अपने उत्तर की तुलना इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से कीजिए।

8. शाब्दिक एवं अशाब्दिक अन्तःक्रिया से आप क्या समझते हैं?

.....
.....
.....

9. शिक्षक-विद्यार्थी के मध्य कक्षागत अन्तःक्रिया में प्रायः किस प्रकार की चर्चा होती है।

.....
.....
.....

10. शाब्दिक अन्तःक्रिया को कितने भागों में विभक्त किया गया है।

.....
.....
.....

4.7 सारांश

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप—

- शब्दकोश को समझ सके कि यह एक या एक से अधिक विशिष्ट भाषाओं में शब्दों का एक संग्रह है, जिसमें सूचना, परिभाषाएं, उच्चारण, अनुवाद एक शब्द के अनेक अर्थ एवं अन्य जानकारीयां उपलब्ध रहती हैं।
- विश्वकोश के बारे में जान सकेंगे कि विश्वकोश बहुत से ग्रन्थों/साहित्यों का संकलन होता है, जिसमें विभिन्न व्यक्तियों के जीवन गाथा सम्बन्धी तथा सामान्य प्रकार के लेख होते हैं।
- समाचार पत्र के महत्व, लाभ, भारत के प्रमुख समाचार पत्र, एवं भारत के प्रमुख समाचार एजेन्सियों के बारे में जाने सके कि ये पत्र शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नये विकास, सम्मेलन, अभिलेख और देश-विदेश में हो रही दिन-प्रतिदिन की घटनाओं आदि की महत्वपूर्ण सूचनायें प्रदान करते हैं।

- शिक्षा के क्षेत्र में प्रकाशित होने वाली महत्वपूर्ण पत्रिकाओं जैसे: Journal of All India Association For Educational Research, Journal of Indian Education, Indian Education Review, Anweshika: Journal of Teacher Education आदि की उपयोगिता के बारे में जान सके।
- भाषा की समझ विकसित करने के लिए विभिन्न कौशलों एवं संकेतकों जैसे: सुनकर समझना, समझकर पढ़ना, भाषा विश्लेषण, नवीन विचार की कल्पना, तर्क करना, स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति आदि के बारे में जान सके।
- भाषा के विभिन्न अधिगम स्रोत जैसे: भाषा प्रयोगशाला, विषयवस्तु एवं शिक्षण विधि सम्बन्धी शैक्षिक सामग्री, प्रश्न बैंक, शिक्षक हस्तपुस्तिका, छात्र कार्यपुस्तिका, स्व-अधिगम शैक्षिक स्रोत एवं शिक्षण स्रोत किट के बारे में जान सके।
- विद्यार्थी-विद्यार्थी एवं शिक्षक-विद्यार्थी के बीच होने वाली कक्षागत अन्तःक्रिया को वाद्-विवाद और चर्चा द्वारा समझ सके कि इनके बीच किस प्रकार की चर्चाएं होती हैं।
- शाब्दिक अन्तःक्रिया को समझ सके कि यह वह व्यवहार है जिसमें शिक्षक तथा विद्यार्थी बोलकर चर्चा करते हैं।
- अशाब्दिक अन्तःक्रिया को समझ सके कि यह वह व्यवहार है जिसमें विद्यार्थी तथा शिक्षक के मध्य बोलकर भावों व विचारों का सम्प्रेषण नहीं होता है अपितु हाव-भाव तथा संकेत के द्वारा होता है।

4.8 अभ्यास प्रश्न/चिन्तनात्मक प्रश्न

1. शब्दकोश से क्या तात्पर्य है? शब्दकोश का उपयोग आप कैसे करते हैं।
2. शब्दकोश का क्या महत्व है, क्या आपने कभी अपना शब्दकोश बनाया है यदि नहीं तो क्यों और यदि हाँ तो किस प्रकार का।
3. विश्वकोश से क्या आशय है। विश्वकोश को उपयोग किस लिए किया जाता है। विश्वकोश से संबंधित तीन ग्रंथों के नाम लिखिए जो इस इकाई में न दिये गये हों।
4. शब्दकोश एवं विश्वकोश में क्या अंतर है समझाइये।
5. समाचार पत्र का क्या महत्व है एवं भारत की प्रमुख समाचार एजेन्सियों को विस्तार से समझाइये।
6. भारत के प्रमुख समाचार पत्रों के नाम लिखिए।

7. पत्रिकाओं(Journal) के बारे में आप क्या समझते हैं? पत्रिकाओं का उपयोग प्रायः किस लिए किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में प्रकाशित होने वाली महत्वपूर्ण पत्रिकाओं के नाम लिखिए एवं ये पत्रिकाएं कहां से व कब-कब प्रकाशित होती हैं, लिखिए।
8. आप भाषा की समझ कैसे एवं किस प्रकार करेंगे। भाषा में अधिगम स्रोत का उपयोग क्यों आवश्यक है। समझाइये।
9. अधिगम स्रोत का उपयोग कक्षा में कब, कैसे एवं किस प्रकार करेंगे। विभिन्न अधिगम स्रोतों के नाम लिखिए।
10. कक्षागत अन्तःक्रिया से आप क्या समझते हैं। कक्षागत अन्तःक्रिया के वर्गीकरण के प्रमुख घटकों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
11. कक्षागत अन्तःक्रिया के समय विद्यार्थी-विद्यार्थी में किस प्रकार से वाद-विवाद और चर्चा होती है। अपने शब्दों में लिखकर, उदाहरण सहित समझाइये।
12. कक्षागत अन्तःक्रिया के समय शिक्षक-विद्यार्थी में किस प्रकार से वाद-विवाद और चर्चा होती है। उदाहरण देकर समझाइये।
13. देश का सबसे पुराना समाचार पत्र कौन सा है एवं यह समाचार पत्र कहां से प्रकाशित होता है।
14. पी.टी.आई एवं यू.एन.आई की स्थापना कब हुई।
15. भारतीय प्रेस परिषद् की स्थापना किस उद्देश्य की गई।
16. गुटनिरपेक्ष समाचार एजेंसी पूल किस वर्ष शुरू की गई।
17. क्या आप समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं पढ़ते हैं। यदि हाँ तो कौन सा समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं पढ़ते हैं?
18. क्या आप पत्रिकाओं में कविता, अनुसंधान पेपर या लेख छपने के लिए देते हैं यदि हाँ तो किस प्रकार की कविता, अनुसंधान पेपर या लेख छपवाने में रुचि लेते हैं।

4.9 प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

1. ऐसा शब्दकोश जिसमें एक या एक से अधिक विशिष्ट भाषाओं में शब्दों का एक संग्रह होता है जिसमें सूचना, परिभाषाएं, उच्चारण, अनुवाद, अर्थ और अन्य जानकारियां उपलब्ध रहती हैं। शब्दकोश मुख्यतः भाषा के वर्णमाला के क्रमानुसार दिये जाते हैं।
2. विश्वकोश बहुत से ग्रन्थों/साहित्यों का संकलन होता है, जिसमें विभिन्न व्यक्तियों के जीवन गाथा सम्बन्धी तथा सामान्य प्रकार के लेख होते हैं। विश्वकोष में कई विषयों के बारे में सामान्य जानकारी दी गई होती है। ऐसा ग्रन्थ जिसमें वर्णक्रम में व्यवस्थित अधिगम की विभिन्न शाखाओं अथवा क्षेत्रों पर प्रकाश डाला जाता है।
3. विश्वकोश से संबंधित किन्ही दो ग्रंथों के नाम निम्नलिखित हैं—
Henry, D. Rivlin and Schueller, H. (1943). *Encyclopaedia of Modern Education*, Philosophical Library, New York.

Walter, S. Monroe, ed. (1968). *Encyclopaedia of Educational Research*, American Education Research Association, Revised ed, The Macmillan Co., New York.
4. एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित विश्वकोश का नाम है—
Rajput, J.S. (2004). *Encyclopedia of Indian Education Volume II, (L-Z)*, NCERT, New Delhi.
5. समाचार पत्र शिक्षा के क्षेत्र में नये विकास, सम्मेलन, अभिलेख और भाषणों की नवीनतम सूचनाये देते हैं। नवीन घटनायें और शैक्षिक समाचार भी समाचार पत्रों में प्रकाशित होते हैं। समाचार पत्र एक राष्ट्र की संस्कृति का दैनन्दिन का लेखा-जोखा है। *United News of India* की स्थापना 19 दिसम्बर 1959 को हुई।
6. पत्रिका (Journal) : समय-समय पर निकलने वाली पत्रिकाओं को एक प्रकाशन के रूप में परिभाषित किया गया है जो कि क्रमबद्ध भागों में प्रायः एक निश्चित अन्तराल के बाद तथा अनिश्चित काल तक चलते रहने के उद्देश्य से प्रकाशित होती है।
दो पत्रिकाओं के नाम निम्नलिखित हैं—

- Journal of All India Association For Educational Research
- Journal of Indian Education

7. भाषा की समझ विकसित करने के लिए मुख्यतः सुनकर समझना, समझकर पढ़ना, भाषा विश्लेषण, नवीन विचार की कल्पना, तर्क करना, स्वतंत्र एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति आदि हैं कौशलों एवं संकेतकों को बताया गया।
8. शाब्दिक अन्तःक्रिया: कक्षा में जब शिक्षक तथा विद्यार्थी बोलकर चर्चा करते हैं तो इस व्यवहार को शाब्दिक अन्तःक्रिया कहते हैं। इसमें अभिव्यक्ति का माध्यम मौखिक, लिखित तथा प्रतीकात्मक होता है। अशाब्दिक अन्तःक्रिया: यह वह व्यवहार है जिसमें विद्यार्थी तथा शिक्षक के मध्य बोलकर भावों व विचारों के सम्प्रेषण से नहीं होता, अपितु हाव-भाव तथा संकेत के माध्यम से होता है।
9. शिक्षक-विद्यार्थी के मध्य कक्षागत अन्तःक्रिया में प्रायः पढाई जा रही विषयवस्तु से संबंधित चर्चा होती है। जैसे, इसमें "अवस्था के परिवर्तन" से संबंधित चर्चा की गई।
10. शाब्दिक अन्तःक्रिया को मुख्यतः दो भागों में विभक्त किया गया है— प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष।

4.10 सन्दर्भ/अन्य अध्ययन

- AIAER. (2015). Journal of All India Association for Educational Research(AIAER), Volume 24, Number 1, June, Bhubaneswar.
- Buch,M.B.(Ed.).(1997). Fifth Survey of Research in Education. National Council of Educational Research and Training (N.C.E.R.T.), New Delhi.
- VCE. (2011). Research Pool. Volume-1, Issue-1, July-Dec., Victoria College of Education, Bhopal.
- Wragg. E. C. (1999). An Introduction to Classroom Observation (2nd Ed.). Routledge Falmer, London.
- एन.सी.ई.आर.टी.(2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्(NCERT), नई दिल्ली।
- एन.सी.ई.आर.टी.(2015). प्राथमिक शिक्षक,शैक्षिक संवाद की पत्रिका राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्(NCERT), नई दिल्ली।
- एस.सी.ई.आर.टी.(2015). शाला इंटर्नशिप, डी.एल.एड., मॉडयूल, राज्य शिक्षा केन्द्र, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्(SCERT), भोपाल।

एस.सी.ई.आर.टी.(2011). शिक्षक शिक्षण सामग्री, सामर्थ्य, प्रशिक्षण मॉड्यूल, राज्य शिक्षा केन्द्र, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद(SCERT), भोपाल।

एस.सी.ई.आर.टी.(2012). म.प्र.गतिविधि आधारित अधिगम कार्यक्रम, शिक्षक मार्गदर्शिका, राज्य शिक्षा केन्द्र, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद(SCERT), भोपाल।

शर्मा, के.के.; त्रिवेदी, सुधा एवं अन्य (2005). शिक्षा शब्दकोश, स्वाति पब्लिकेशन्स, जयपुर।

सिंह,एल.सी.(2005). सूक्ष्म शिक्षण.एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।

सिंह,रामपाल एवं शर्मा, ओ.पी.(2015).शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी,अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।

राय, पारसनाथ (2006). अनुसंधान परिचय. लम्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।